बच्चों और माता पिता के लिए कविताएं

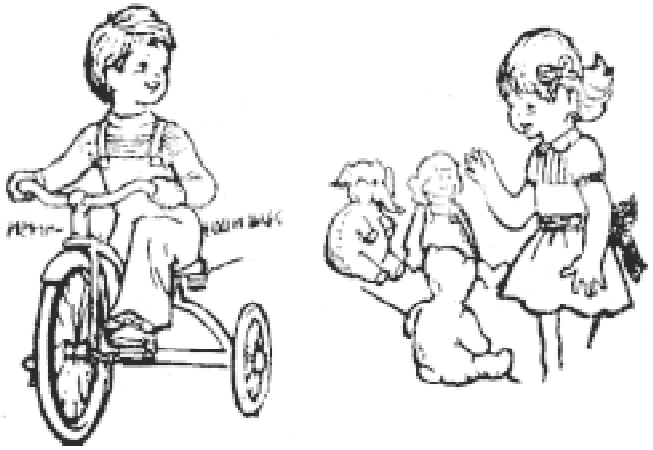

प्रभु यीशु मसीह ने कहा:

''छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो.....
क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।''

इफिसियों 5:22,25 पत्नियों अपने अपने पति के आधीन रहो, जैसे प्रभु के-पतियों अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम रखो। इफि. 6:1-बालको प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनों क्योंकि यह उचित है। 2. अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। 3. कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। 4. और हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परंतु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उनका पालन पोषण करो।

पिताओ साहसी बनो, अपनी बुरी आदतों और मित्रों को छोड़ो और अपनी पत्नी, बच्चों और अपने परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करो। क्योंकि जिस समय सब आपको छोड़कर चले जाएंगे उस समय और यदि आप चाहें तो हमेशा के लिए वे ही आपके मित्र होंगे।

–पार्कर गैम्वैल

बच्चों और माता पिता के लिए कविताएं

परमेश्वर ने हमें लगभग 60 वर्ष मैक्सीको और यूनाईटेड स्ट्टेस के शहरों और गावों में कार्य करने के लिए दिए। बच्चों और उनके माता पिता के प्रति परमेश्वर के प्रेम के कारण परिवारों में पढ़ी जाने के लिए परमेश्वर के विचारों और कविताओं की स्पैनिश भाषा में लिखी गई एक पुस्तक को हमने ढूंढा।

हमें कोई नहीं मिला, परंतु परमेश्वर ने हमारे हृदय में डाला कि हम इस पुस्तक को लिखें। अभी हमने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। हम कवि होने का दावा नहीं कर रहे हैं। विपरीत भाव से, यदि कुछ अच्छा है तो यह परमेश्वर का काम है। हम आपके परिवार के साथ कुछ ऐसा बांटना चाहेंगे जो परमेश्वर ने हमें और हमारे आठ बच्चों को दिया है। यह वही एक सत्य है जिसने लाखों व्यक्तियों और परिवारों को परिवर्तित कर दिया। यह वही सत्य है जो ये पुस्तक बताती है। परमेश्वर उनके ऊपर अपना अनुग्रह करता है जो उसके ऊपर विश्वास, पश्चाताप और दीनता के साथ आते हैं। उसके वचन (बाइबल) और यीशु मसीह पर विश्वास करें।

कृपया इस पुस्तक को अपने बच्चों-सारे परिवार के सम्मुख पढ़ें। परमेश्वर आपको आपके जीवन और आपके परिवार में क्षमा और अनुग्रह को अनुभव करने के लिए विश्वास दे।

सत्यता के साथ आपका मित्र
—पार्कर गैम्वैल

आराधना

परमेश्वर तेरा धन्यवाद

प्यारे प्रभु तूने मुझे बनाया
और मैं धन्यवाद बहुत हूं देता
कि, अपनी सृष्टि के बीच में
तून मुझे रहने के लिए बनाया-

विशेष उद्देश्य के लिए,
मैं तेरे स्वरूप में बनाया गया,
इसलिए कि मैं तुझे प्यार कर सकूं
और जान सकूं कि तू भी मुझे प्यार करता है।

परमेश्वर पवित्र बाइबल की पुस्तक उत्पत्ति के अध्याय 1:26-28 पदों में निम्नलिखित कहता है:

26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं:- 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। 28. और परमेश्वर ने उनको आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।

प्रभु यीशु ने कहा: **यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे। यूहन्ना 14:23**

सोने का समय

सोने को मैं अब जाता हूं,
प्रार्थना करता हूं मैं प्रभु आत्मा को मेरी सम्भाल।
यदि मैं मरूं, जागने से पहले,
प्रार्थना मेरी है ये, प्रभु यीशु आत्मा को मेरी ले ले तू।

इस कविता को सीखना और आपका बच्चों के साथ घुटनों पर होकर प्रार्थना करना और उनका परमेश्वर के साथ बात करने में उनकी सहायता करना कितना सुखद होगा।

पवित्र बाइबल निम्नलिखित बताती है: **''मैं शांति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि हे यहोवा, केवल तू ही मुझको एकांत में निश्चिंत रहने देता है।'' (भजन संहिता 4:8)**

हमारे भोजन के लिए तेरा धन्यवाद हो

स्वर्गीय पिता तेरा धन्यवाद हो,
हमारे इस प्रतिदिन के भोजन के लिए,
और हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए,
कि तेरे प्रेम ही के द्वारा हम भोजन करते हैं।

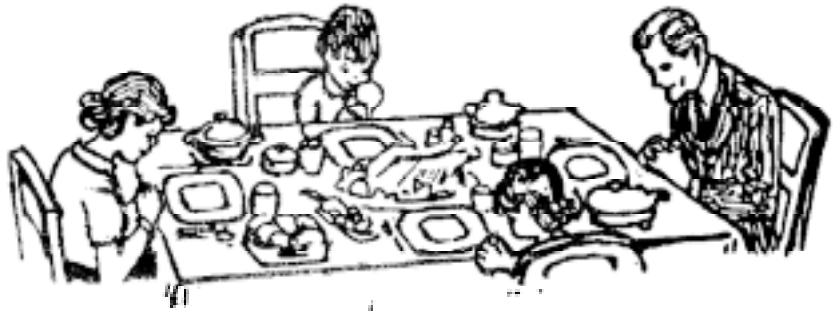

परमेश्वर को सब चीज़ों के लिए धन्यवाद देना अति आवश्यक है। आप यह प्रार्थना भोजन के समय कर सकते हैं। प्रभु यीशु ने भी भोजन के लिए धन्यवाद किया जब उन्होंने भोजन किया था।

बाइबल क्या बताती हैं पढ़ें:

तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियां लीं, और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे परोस दिया। मरकुस 8:6

और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। (इफि. 5:20)

जो खाता है, वह प्रभु के लिए खाता है, क्योंकि वह प्रभु का धन्यवाद करता है, और जो नहीं खाता वह प्रभु के लिए नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। रोमियों 14:6

सुंदरता

सब सुन्दरता मुझको भाती है,
जब मैं अपने चारों ओर निहारता हूं
अपने माता पिता के प्रेम को,
और अपने नन्हे पिल्ले को।

छोटे प्यारे चूज़ों को
प्रफुल्लित हो जो ची ची कर रहे हैं,
और विशाल पर्वतों को लगता है
जैसे उनको परमेश्वर ने मेरे लिए ही बनाया है।

देखता हूं जब मैं फूलों को,
कोई कुरूप नहीं उनमें,
मैं जानता हूं परमेश्वर ने सब बनाया है
सुंदर हैं यह सब ही।

पवित्र बाइबल में परमेश्वर कहता है; **तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सबको देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया। उत्पत्ति 1:31**

उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुंदर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता। समोपदेशक 3:11

18. परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। 19. इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। 20. क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं 21. इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया। रोमि. 1:18–21

स्वर्गीय पिता तेरा धन्यवाद

हे स्वर्गीय पिता, तेरा धन्यवाद हो,
कि यीशु सनातन परमेश्वर,
स्वर्ग की ऊंचाईयों से आया
और अपनी पृथ्वी के ढेले पर चला।
वह आया कि मुझे वो बचा सके,
निदर्य मौत के वृक्ष से,
यद्यपि वह मेरी क्षमा को लेकर आया,
ताकि वह मुझे मुक्ति दिला सके।

हे प्यारे यीशु तेरा धन्यवाद हो,
कब्र की शक्ति लुप्त हो गई
अब मेरे पास अनन्त जीवन है,
क्योंकि तेरे जीवन ने मोल चुकाया है।
अपना हृदय मैं तेरे लिए खोलता हूं,
अभी इसी क्षण से मैं खोलता हूं;
अब मेरे अंदर तू रहता है,
जब तक मैं तेरे साथ चला ना जाऊं।

यह सर्वदा मैं याद रखूं,
कि मैं अब तेरा हूं,
ना केवल इसलिए कि तूने मुझे बनाया,
बल्कि अपना जीवन भी तूने मुझे दिया।
अपना हृदय मैं खुशी के साथ समर्पित करता हूं,
कृपया अब मुझे अपना वासस्थान बनाएं,
अपनी सेवा के योग्य मुझे बनाएं,
जब तक मैं अपने स्वर्गीय घर ना जाऊं।

परमेश्वर बाइबल से हमें शिक्षा देता है:

रोमियों 10:9-13 9. कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो निश्चत उद्धार पाएगा। 10. क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है। 11. क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा। 12. यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं इसलिए कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उद्धार है। 13. क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

क्या आप पश्चात्तापी महसूस करते हैं? प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके ग्रहण करने के लिए आप इस कविता को अपनी प्रार्थना के रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

पवित्र बाइबल इसको इस प्रकार बताती है: यूहन्ना 1:10-12 –10. वह जग में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। 11. वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। 12. परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।

यह आज भी सच है

प्रार्थना

हमारे परिवार के लिए एक प्रार्थना

हम दीनता के साथ यीशु के नाम में निवेदन करते हैं;
मन की शांति और अनुग्रह के लिए,
घर की सारी समस्याओं के लिए, प्यारे परमेश्वर,
जो हमारे धमण्ड और पापों का कारण हैं।

तू ही अकेला सब बातों को ठीक कर
और हमारे सारे अधर्मों को क्षमाकर सकता है;
इस तेरी दया को अब हम चाहते हैं,
कि हमारे घर में अब तू रहे।

हमें अनुदान दे कि हम और अधिक नरमी के साथ चलें,
प्रत्येक क्षण तेरे ऊपर विश्वास करते हुए,
प्रभु यीशु तेरे नाम से प्रार्थना करते हुए,
कि तू अपनी सामर्थ से हमें सम्भाल।

मैं जानता हूं कि तू हमारी सुनता है,
हमारा विश्वास तेरे वचन पर है;
तेरी प्रतिज्ञाएं सर्वदा सत्य हैं,
क्योंकि प्रिय प्रभु तू ही परमेश्वर है।

प्रभु यीशु हमें बताते हैं:

यूहन्ना 14:13-15 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोंगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। 14. यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ मांगोंगे, तो मैं उसे करूंगा। 15. यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

1 यूहन्ना 1:9 -यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

नन्हीं चिड़ियाएं

नन्हीं चिड़ियाओं को मेरे परमेश्वर ने बनाया,
ताकि मैं उन्हें उड़ता हुआ देख सकूं,
और भी अधिक हम आनंद ले सकें,
ऊंचाई से सुनकर मधुर संगीत को उनके।

परमेश्वर जानता है और प्रत्येक छोटे जानवर का ध्यान रखता है।

उत्पत्ति 1:22 -और परमेश्वर ने यह कहकर उनको आशीष दी, कि फूलो-फलो और समुद्र के जल में भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।

मत्ती 6:26 -आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खेतों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है; क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?

वर्षा

उस समय कितना सुखद महसूस करता हूं जब मैं अपने बिछौने पर जाता हूं,
मंद मंद होती वर्षा की आवाज को सुनता हूं
जब बिजनी कड़ कड़ाती है
यह जानकर कि परमेश्वर पास है सुरक्षित होता हूं।

इसलिए वर्षा बहुत आवश्यक है
एक ऐसी भेंट जो केवल परमेश्वर ही दे सकता है;
हम निश्चित रूप से उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।
क्योंकि परमेश्वर वर्षा हमें जीवित रहने के लिए देता है।

पढ़ें कि परमेश्वर अपने पवित्र वचन में क्या बताता है,

भजन संहिता 135:1-6 -यहोवा की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो, हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो। 2. तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े रहते हो। 3. यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि यहोवा भला है; उसके नाम का भजन गाओ क्योंकि यह मनभाऊ है! 4. यहोवा ने तो याकूब को अपने लिए चुना है, अर्थात इस्राएल को अपना निज धन होने के लिए चुन लिया है। 5. मैं तो जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा सब देवताओं से महान है। 6. जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहरे स्थानों में किया है।

लैव्यव्यवस्था 26:1,3:4 -1. तुम अपने लिए मूरते न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूर्ति वा लाट अपने लिए खड़ी करना, और न अपने देश में दण्डवत करने के लिए नक्काशीदार पत्थर स्थापन करना, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। 4. तो मैं तुम्हारे लिए समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे। 5. यहां तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिंत बसे रहोगे। 6. और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डराने वाला न होगा।

झूला

झूले के ऊपर खेलना आनंद भरा है कितना
और हवा में होकर उड़ना
ये मुझको है जमीन से ऊपर उठाता,
और है मुझे आकाश की ओर ले जाता।

मैं पूरी शक्ति के साथ हूं रस्सियों को पकड़ता,
चाहता कभी नहीं मैं गिरना
इस प्रकार मैं हवा में हूं तैरता
पेड़ों की चोटियों की ऊंचाइयों तक हूं जाता।

परमेश्वर हमें प्यार करता है और हम उसकी सेवा हर समय कर सकते हैं।
परमेश्वर कहता है:

कुलुस्सियों 3:17 –और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

1 कुरि. 10:31 –सो तुम चाहें खाओं, चाहें पीओ, चाहें जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।

परमेश्वर जानता है

परमेश्वर ने मेरे कान बनाए,
क्योंकि मुझे उसको भी सुनना चाहिए
और जब मैं उससे बात करता हूं
वह सर्वदा मेरी सब बात सुनता है।

परमेश्वर ने मेरा मुंह बनाया है,
मैं जानता हूं वह भी बोल सकता है;
मैं उसकी सुनता हूं बाइबल को पढ़ते हुए,
उसकी सारी सच्चाई को मैं देखता हूं।

परमेश्वर ने मेरी बुद्धि को विचारने के लिए बनाया है,
वह मेरा मार्ग प्रदर्शन करना चाहता है;
इसलिए मैं जान सकता हूं उसका मार्ग उत्तम है,
और उसके क्रोध का हकदार नहीं हूं मैं।

परमेश्वर ने प्रेम करने के लिए मेरा हृदय बनाया है,
वह मुझे बहुत अधिक प्यार करता है;
मैं उसे प्यार करता हूं क्योंकि उसने मुझसे पहले प्यार किया है,
यही सब है जिसके लिए उसने मुझे बनाया है।

परमेश्वर बाइबल के द्वारा हमें बताता है कि किस प्रकार हम उसके साथ बातें करें और किस प्रकार उसकी संतान बन सकते हैं।

यूहन्ना 5:24 –मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले प्रतीति की करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परंतु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

यहोवा मेरा चरवाहा है

दाऊद का भजन

1. **यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।**
2. **वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है;**
3. **वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्मों के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।**
4. **चाहें मैं धोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं। तौभी हानि से न डरूंगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शांति मिलती है।**
5. **तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिए मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है; मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।**
6. **निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।**

यह कैसे हो सकता है जब हम परमेश्वर को अपने जीवन में अगुवाई करने देते हैं!

ठठोली

एक शांति है जो हमारे अंदर आती है,
जब हर बात में हम सच्चे होते हैं,
और सरल मार्ग का चयन नहीं करते हैं,
किंतु जो सही होता है उसी को चुनते हैं।

किसका भला हम कर सकते हैं इसको खोजते हैं,
पाठशाला में, घर में और खेल के मैदान में;
परंतु ऐसे मित्र हम चाहते हैं जो हमारे जैसा ही हो;
प्रत्येक दिन भलाई करना जो खोजते हैं।

परमेश्वर अपने वचन में कहता है: **रोमियों 12:10 –भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।**

करना अच्छा है

हम करेंगे या नहीं बोलने से
करना अच्छा है,
परमेश्वर और हमारे माता पिता बहुत अच्छी तरह जानते हैं,
कि जो कहते हैं परंतु नहीं करते।

परमेश्वर का वचन खरी बुद्धि है।

नीतिवचन 20:11 – लड़का भी अपने कामों से पहिचाना जाता है, कि उसका काम पवित्र और सीधा है या नहीं।

रोमियों 12:11 – प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो प्रभु की सेवा करते रहो।

1 यूहन्ना 3:18 -हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

पेड़

मुझे पेड़ पसन्द हैं; वे मुझे आकर्षित करते हैं,
चाहें वे छोटे हों या बड़े;
उनकी छाया में हम उतरना और फिसलना कर सकते हैं;
और एक दूसरे को पुकार सकते हैं।

परमेश्वर ने सब चीज़ें बहुत अच्छी बनाई हैं,
हम उसके प्रत्येक अनुग्रह से प्रसन्न हैं;
और उसकी सारी आशीषों के आनंद के लिए
हम उसकी अपने पूरे हृदय के साथ आराधना करते हैं,

परमेश्वर ने जब संसार को बनाया उस समय इस प्रकार कहा:
उत्पत्ति 1:11-12 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीज वाले छोटे छोटे पेड़ और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया। 12. तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगे: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

खिलौनों के ऊपर लड़ाई

खिलौनों के ऊपर लड़ाई,
तरीका नहीं है खेलने का;
हमारे घर के अंदर लड़ाई,
निश्चित रूप से तरीका नहीं है रहने का।

वास्तव में, मुझे यह प्रतीत होता है
कि किस प्रकार शांति और सहायता मिलती है,
और परमेश्वर से उसकी करूणामय सहायता मांगने से
अपने घर को आशीषित करते हैं।

बाइबल की यह पदें मुझे बहुत पसंद हैं।

भजन संहिता 133:1 -दाऊद का गीत। ''देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है, कि भाई लोग आपस में मिले रहें!''

कुलुस्सियों 3:12-13 -इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाई जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता और सहनशीलता धारण करो। 13. और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।

जीभ

हमारी जीभ बहुत खुश होती है,
जब हम मिश्री खाते हैं,
परमेश्वर ने इसे बनाया है,
जिससे हम बातचीत करते हैं

(एक दूसरे से बात करनी है)

परंतु पवित्र बाइबल हमें सचेत करती है
हमें अपने हृदयों पर नियंत्रण रखना है
क्योंकि हमारे हृदयों से ही
हमारा मुंह बोलने के योग्य होता है।

हृदय जब प्रसन्न होता है,
आशीषें निरन्तर देता है,
परन्तु हृदय हममें से प्रत्येक का,
वही प्रगट करता है, जो उसके हृदय में होता है।

हमारे व्यवहार के अनुरूप ही हमारा हृदय है;
परमेश्वर ही केवल इसको शांत कर सकता है;
और यीशु के ऊपर विश्वास के द्वारा ही
परमेश्वर हमारे हृदयों के लिए अपने मरहम का अनुदान करता है।

परमेश्वर हमें बताता है कि वास्तव में ज्ञान किस तरह का है **याकूब 3:17 पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है**

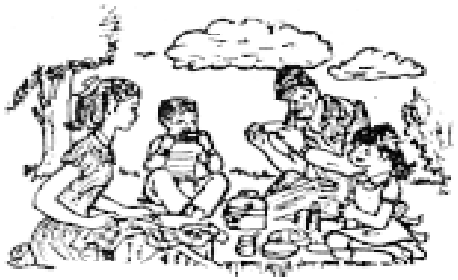

परमेश्वर पौलुस के द्वारा हमसे और अधिक बोलता है। **कुलु. 3:5-11**

इसलिए अपने उन अंगों को मार डालों, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है। 6. इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। 7. और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। 8. पर अब तुम भी इन सबको अर्थात क्रोध, रोष, बैरभाव, निंदा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। 9. एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। 10. और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। 11. उसमें न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतना रहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र : केवल मसीह सब कुछ और सब में है।

याकूब 1:19-26 -हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो: इसलिए हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो। 20. क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है। 21. इसलिए सारी मलिनता और बैरभाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। 22. परंतु वचन पर चलने वाले बनों, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। 23. क्योंकि जो कोई वचन का सुनने वाला हो, और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। 24 इसलिए कि वह अपने आप को देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। 25. पर जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है। 26. यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है।

समुद्र तट

कभी कभी पसन्द करता हूं मैं
दौड़ना बिना जूतों के
महासागर, बालू और सूर्य को
करता हूं महसूस मैं।

दौड़ता हूं मैं लहरों में,
मुख पर पवन के झोखों के साथ।
जाता हूं जब मैं समुद्र तट पर,
प्रिय स्थान है मेरा यह

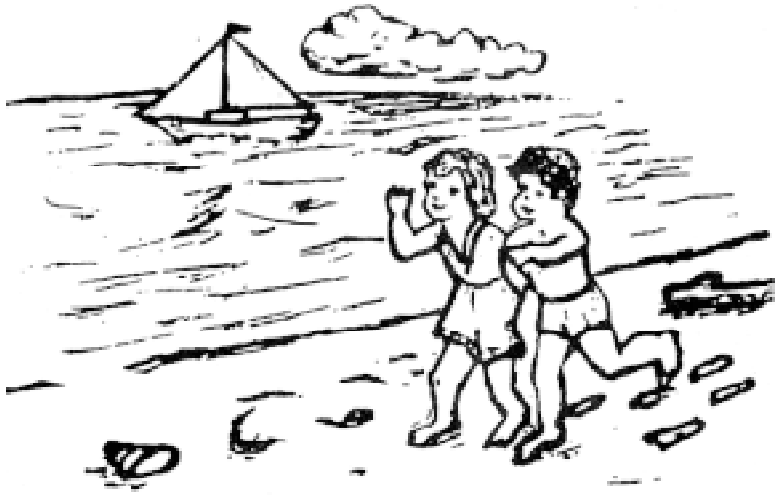

परमेश्वर के कामों का आनन्द लेते समय उसे स्मरण करना अच्छा और सही है।
भजन संहिता 104:24-27 हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं। इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है। 25. इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उस में अनगिनित जलचरी जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं।

26. उसमें जहाज़ भी आते-जाते हैं, और लिब्यालान भी जिसे तूने वहां खेलने के लिये बनाया है। 27. इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करे।

बादल

कितनी सरलता के साथ बादल
आकाश में मंडराते हैं,
मुझे विश्वास है कि वे ऊंचे हैं
वहां तक उकाव भी उड़ नहीं सकते हैं।

और जब सूर्य का,
अस्ताचल आरम्भ होता है,
अभी तक परमेश्वर बादलों को
उत्तम रंगों से रंगता है।

मैं सोचता हूं बाइबल में दूसरे लोगों द्वारा परमेश्वर के प्रति किए गए अनुभव की प्रशंसनीय आराधना है।

भजन संहिता 104:1-2 : हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह! हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त महान है। तू विभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहिने हुए है। 2. जो उजियाले को चादर की नाईं ओढ़े रहता है, और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है।

भजन संहिता 57:9-11 : 9. हे प्रभु, मैं देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूंगा; मैं राज्य राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊंगा। 10. क्योंकि तेरी करुणा स्वर्ग तक बड़ी है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंचती है। 11. हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान है! तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

अध्ययन करना सीखना

मैं सीख रहा हूं;
बहुत कुछ सीखने को है,
मैं ध्यान देना, और पढ़ना
और सीखना और बढ़ना चाहता हूं।

आज के समय, बहुत कुछ है जिसके लिए लिखा है,
पढ़ना नहीं चाहिए जिसे एक मसीही को,
मालूम मुझे है पवित्र बाइबल में,
छिपा है रहस्य सफलता का।

हमारे प्रत्येक परिवार के सदस्य को
चाहिए खोजना परमेश्वर, सत्य और प्रेम को;
अनुसार चलने से पवित्र बाइबल के,
मिलता है अनुग्रह ऊपर परमेश्वर से।

परमेश्वर हमसे बात करता है क्योंकि वह हमें प्यार करता है और हमें ठीक करना चाहता है और हमें वह समझ देता है। देखें बाइबल में वह क्या कहता है :

भजन संहिता 1 : 1. क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग पर खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है। 2. परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता, और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। 3. वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है। 4. दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। 5. इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे। 6. क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा। (इसको आप यदि चाहे तो याद करें)

परमेश्वर का वचन यह कहता है :-

नीति. 2:1-4 : –हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े। 2. और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; 3. और प्रवीणता और समझ के लिए अति यत्न से पुकारे, 4. और उसको चांदी की नाईं ढूंढ़े और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे।

2 तीमु. 3:13-17 : और दुष्ट, और बहकाने वाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे। 14. पर तू इन बातों पर जो तूने सीखी हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह, कि तूने उन्हें किन लोगों से सीखा था? 15. और बालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। 16. हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। 17. ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए॥

कुलु. 3:16 – मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।

नीति. 1:7 – यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।

परमेश्वर का स्वर्ग वास्तविक है

हमारे प्रभु यीशु ने स्वर्ग के लिए कहा: उसने कहा कि क्रूस पर चढ़ाए जाने के पश्चात वह मृतकों में से जीवित हो उठेंगे और स्वर्ग को अपने स्वर्गीय पिता के पास चले जाएंगे। उसने कहा कि जो कोई भी पश्चाताप के पश्चात् उसके ऊपर विश्वास करेगा वह उसके लिए स्थान तैयार करेगा।

इसको आप यूहन्ना 14:1-6, 11 में पढ़ें – तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। 2. मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। 3. और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। 4. और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो। 5. थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है? तो मार्ग कैसे जानें? 6. यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। 11. मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।

देखें कि किस प्रकार परमेश्वर ने स्वर्ग को यूहन्ना के ऊपर प्रदर्शित किया।

प्रका. 21:1-8 –1. फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। 2. फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। 3. फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा, और उन का परमेश्वर होगा। 4. और वह उन की आंखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। 5. और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं, फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। 6. फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अल्फा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा। 7. जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। 8. पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों,

और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।

प्रका. 22:3–और फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे।

प्रका. 22:12-17 : 12. देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। 13. मैं अल्फा और ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि और अन्त हूं। 14. धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। 15. पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहनेवाला, और गढ़नेवाला बाहर रहेगा। 16. मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे: मैं दाऊद का मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं। 17. और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।

परमेश्वर कई स्थानों पर उस नरक के विषय में बोलता है जो कि उन लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है जो अपने पापों और झूठ से पश्चाताप करके उन्हें छोड़ना नहीं चाहते। परमेश्वर कितना भला है कि वह हमें इनसे बच निकलने का और जीवन जल को पीने का अधिकार देता है। तुम कैसे उसके इस अनुग्रह को प्राप्त कर सकते हो? अपनी योग्यता के बल पर कभी नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके और उससे क्षमा याचना करते हुए हम इसे प्राप्त कर सकते हैं। यह उसके मार्गों पर चलने के द्वारा, यह ना विचारते हुए कि दूसरे क्या सोचते हैं। परमेश्वर दीनों को निमन्त्रण देता है, और वह आपके द्वारा क्षमा मांगे जाने पर आपको क्षमा करता है। परमेश्वर उसी क्षण आपके हृदय में आता है। किसी दिन वह आपको स्वर्ग ले जाएगा।

उसके द्वारा किए गए परिवर्तन को आप देखेंगे!

आपके परिवार के लिए परमेश्वर का परामर्श

वह परिवार आनन्दित है जो परमेश्वर के इन वचनों का पालन करता है।

परमेश्वर कहता है 1. इसलिये प्रिय, बालको की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। 2. और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। 3. और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। 4. और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन् धन्यवाद ही सुना जाए। 5. क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्त्ति पूजनेवाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। 6. कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है। 7. इसलिये तुम उन के सहभागी न हो। 8. क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो 9. (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। (इफिसियों 5:1-9)

1. हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। 2. अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। 3. कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। 4. और हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो। (इफिसियों 6:1-4)

6. और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; 7. और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते इनकी चर्चा किया करना। (व्यवस्थाविवरण 6:6-7)

बुद्धिमान सुलैमान ने कहा : लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा। (नीति. 22:6)

लड़के के मन में मूढ़ता बन्धी रहती है, परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उस से दूर की जाती है। (नीति. 22:15)

पौलुस प्रेरित ने कहा : और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। (2 तिमुथियुस 3:15)

परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कहा : सो तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के साम्हने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। 7. देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उसको पुाकरते हैं? 8. फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास धर्ममय ऐसी विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे साम्हने रखता हूं? (व्यवस्थाविवरण 4:6-8)

दस आज्ञाएं

निर्गमन 20:1-18

1. तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे, 2. कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥ 3. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। 4. तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।

5. तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं, 6. और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूं॥ 7. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा। 8. तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। 9. छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना; 10. परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। 11. क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया॥ 12. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए॥ 13. तू खून न करना॥ 14. तू व्यभिचार न करना॥ 15. तू चोरी न करना। 16. तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना॥ 17. तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, या बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना॥ 18. और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धूआं उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देख के, कांपकर दूर खड़े हो गए।

आज्ञाएं अच्छी हैं परन्तु वे किसी को बचा नहीं सकती हैं। यह हमें सिखाती हैं कि हम पापी हैं, और हमें पश्चाताप करना आवश्यक है। हमें उस एक से क्षमा मांगनी चाहिए जो हमें क्षमा कर सकता है अर्थात प्रभु यीशु मसीह। यह सुसमाचार है!

मैं सोने जाता हूं

अब मैं सोने जाता हूं,
कसकर अपनी आंखें बन्द करता हूं,
आनन्द से मैं भरता हूं जब मैं सोने जाता हूं,
अपने भाई के संग जब मैं सोता हूं।

हम खेलते कूदते हैं पूरा दिन,
अब समय है सोने का,
बल और शक्ति बनी रहे,
परमेश्वर ने हमारे लिए रात बनाई है।

विद्यालय और गृह कार्य,
रोज का हमने समाप्त किया,
परमेश्वर से हमने प्रार्थना करी कि
हम आराम करें परन्तु अकेले नहीं।

अपने प्रियों के चुम्बनों के साथ,
अन्त में मैंने अपनी आंखें बन्द करीं;
और शान्ति के साथ मैं सोने जाता हूं,
और अपने भाई के साथ जब मैं सोता हूं।

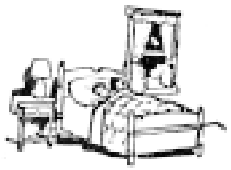

समस्याओं के पश्चात भी हम शान्ति से सो सकते हैं।

2. बहुत से मेरे प्राण के विषय में कहते हैं कि उसका बचाव परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता। 3. परन्तु हे यहोवा, तू मेरे चारों ओर मेरी ढाल है, तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊंचा करनेवाला है। 4. मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं, और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। 5. मैं लेटकर सो गया; फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्भालता है। (भजन संहिता 3:2-5)

जब आपको मदद की आवश्यकता हो, बाइबल को कहां से पढ़ना चाहिए।

भयभीत–यूहन्ना 11:17:20 : रोमियों 8: 1 कुरिन्थियों 15:51-58, 2 कुरिन्थियों 4:8-18, 5:1-8, इब्रानियों 13:6, भ.सं. 23
चिन्ता–मत्ती 6:25-34, फिलिप्पियों 4:6, इब्रानियों 13:5, 1 पतरस 5:7
घोर विपत्ति–लूका 8:22-25, 2 तीमुथियुस 3:
निराशा–मत्ती 5:4,11,12, यूहन्ना 14:1-4, 2 कुरिन्थियों 4:8-18, फिलिप्पयों 4:4-7, इब्रानियों 13:5-6, 1 यूहन्ना 3:1-3
शोचनीय क्षण–मत्ती 6:25-34, 2 तीमुथियुस 1:7, इब्रानियों 4:16, 13:6
असफल मित्र–मत्ती 10:21-31, लूका 17:3-4, रोमियों 12:14,17,19,21 1 कुरिन्थियों 13:
घर त्यागना–मत्ती 10:16-20, 28:19-20, लूका 15:11-32, यूहन्ना 14:1-4, इब्रानियों 11:8-16
परमेश्वर की सुरक्षा की आवश्यकता–मत्ती 10:24-31, रोमियों 8:31-39, फिलिप्पियों 4:19
प्रार्थना की आवश्यकता–मत्ती 6:5-15, 18:19-20, लूका 11:'1-13, 18:1,14, 23:39-43, यूहन्ना 17:, 1 यूहन्ना 5:14-15
आन्तरिक शान्ति की आवश्यकता–लूका 10:38-42, यूहन्ना 14: 16:20-24, 33, रोमियों 5:1-5, फिलिप्पयों 4:6-7, कुलुस्सियों 3:15
बीमारी और दर्द–मत्ती 26:39, रोमियों 5:3-5, 2 तीमु. 2:3, इब्रानियों 12:1-11, याकूब 5:11-15, 1 पतरस 4:12-13, 19
बहुत अधिक उदासी के समय–रोमियों 8:34-39, 1 कुरि. 15:51-58, 2 कुरि. 1:3-4, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18, यूहन्ना 14:, इब्रानियों 12:6-13
परीक्षा के समय–मत्ती 6:24, 25:1-13, मरकुस 9:42-50, 13:33-57, 1 कुरि. 10:13, फिलि. 4:8, याकूब 1:12, 2 पतरस 2:9, यहूदा 24-25
कृतज्ञता–1 थिस्स. 5:18, इब्रानियों 13:15
थकावट–मत्ती 11:28-30, रोमियों 8:31-39, गलतियों 6:9-10
यीशु हमें परमेश्वर को जानना और क्षमा प्राप्त करना सिखाते हैं।
किस प्रकार उद्धार प्राप्त करें–यूह. 3:16, 5:24, 36, 1:10-13
क्षमा–मत्ती 18:21-35, मरकुस 11:25-26
अनन्त जीवन–यूहन्ना 10:10-18
सत्य और जीवन और स्वर्ग का मार्ग–यूहन्ना 14:6

प्रभु यीशु सिखाते हैं (क्रमशः)

उत्तरदायित्व	–	मत्ती 25:14-30, लूका 19:11-27
व्यभिचार	–	मत्ती 5:27-32
क्रोध	–	मत्ती 5:22-24
भाईचारा	–	यूहन्ना 13:34-35
खुशी	–	यूहन्ना 14:1-3, 16:22
मूर्तिपूजा	–	लूका 2:41-49
सामंजस्य	–	मत्ती 6:22-24
अपराध	–	मत्ती 15:17-20
मृत्यु	–	लूका 16:19-31, यूहन्ना 11:25-26
कपट	–	मत्ती 5:27-28
बुरा आचार	–	यूहन्ना 3:19-21
चुंगी	–	लूका 20:21-25, यूहन्ना 9:4
धैर्य	–	लूका 21:9-19
शत्रु	–	मत्ती 5:43-48
क्षमा याचना	–	लूका 14:15-24
असंयमी	–	लूका 12:16-31
विश्वास	–	मत्ती 8:5-13
झूठा	–	मत्ती 26:69-75
न्याय	–	मत्ती 7:1-5
स्वतन्त्रता	–	यूहन्ना 8:31-36
मित्रत्व	–	यूहन्ना 15:12-15
उदारता	–	लूका 6:38
लालच	–	मत्ती 16:24-27
तिरस्कार करना	–	मत्ती 5:43-48
आदर	–	मत्ती 21:28-31
माता-पिता का आदर	–	मत्ती 15:4, यूहन्ना 19:25-27
दीनता	–	लूका 18:9-14
ईमानदारी	–	यूहन्ना 3:18-21
विवाह संस्कार	–	मरकुस 10:2-9
आज्ञा पालन	–	मत्ती 7:21-23, यूहन्ना 14:15-24
दृढ़ता	–	मरकुस 13:5-13
पवित्रता	–	मत्ती 5:27-32
पाप	–	यूहन्ना 8:24, 34-36
सदभाव	–	मत्ती 7:15-29
नरक और स्वर्ग	–	लूका 16: यूहन्ना 14:

''हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती।'' दुर्भाग्यवश यह धार्मिकरूप से भी सत्य है। कुछ ईमानदार लोग हैं जो धर्म के विषय में सिखाते हैं परन्तु वे गलत होते हैं। वे बाइबल के साथ आते हैं परन्तु नहीं जानते कि किन बातों को स्वर्ग पर जाने के लिए छोड़ना चाहिए। क्षमा आपके पास किसी धर्म के द्वारा, आपकी अपनी योग्यता से और किसी पुरोहित के द्वारा नहीं आती परन्तु प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आती है जो केवल एक ही परमेश्वर है और आपके लिए मरा। वह आपके साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाना चाहता है।

मित्रो, आप पृष्ठ पर दी गई कविता **स्वर्गीय पिता तेरा धन्यवाद हो** को अपनी प्रार्थना के लिए हृदय की गहराई के साथ प्रभु यीशु को अपने हृदय में ग्रहण करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं।

या दूसरे शब्दों में कहें : प्रिय परमेश्वर, मैं मानता हूं, कि मैं एक पापी हूं। मैं विश्वास करता/करती हूं कि प्रभु यीशु मसीह मेरे अपने पापों से मुझे माफ कराने के लिए क्रूस पर मारे गए। मैं विश्वास करता / करती हूं कि वह मृतकों में से मुझे न्याय दिलाने और बचाने के लिए जी उठे हैं। अभी इसी समय मैं उन्हें अपना उद्धारकर्ता और परमेश्वर ग्रहण करता / करती हूं। परमेश्वर तेरा धन्यवाद हो। आमीन।

नाम _____ तिथि _____

हम इन कविताओं और धर्मपुस्तकों को आपके लिए इसलिए लाए हैं क्योंकि परमेश्वर आपसे प्यार करता है और आपको और आपके परिवार को आशीष देना चाहता है। परमेश्वर हमें अपने परिवार को सच्चाई को सिखाने के लिए एक बड़ा उत्तरदायित्व देता है। जब हम इसको करते हैं तो परमेश्वर हमें शैतान के हमलों से बचाता है। हम बहुत खुश हैं कि जेल के कैदियों ने इस पुस्तक को बहुत पसन्द किया। कभी-कभी वे सड़क वाले लोगों से अधिक अच्छे होते हैं **यह एक बहुत बड़ी आवश्यकता है कि हम प्रतिदिन अपना समय बाइबल और परमेश्वर के साथ बिताएं और अपने बच्चों को वचन और उदाहरण दे देकर सिखाएं।**

हम सुनना पसन्द करेंगे यदि इस पुस्तक से आपको आशीष मिली है या आप और प्रतिलिपियां मंगाना चाहते हैं या आप दान देना चाहते हैं कि और लोग भी इनको प्राप्त कर सकें। नीचे लिखे पते पर लिखें।

Or to : Parker Gamewll, La Luz, P.O. Box 3522El Paso . TX 79923, USA

मत्ती 5 :

27. तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना।
28. परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।
7. अपराधों के कारण संसार पर हाय! क्योंकि ऐसा होना चाहिए था कि अपराध आए; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा अपराध आते हैं।
8. इसलिए यदि तेरा हाथ या पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर अपने से अलग फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यह भला है कि तू लंगड़ा या लूला होकर जीवन को प्राप्त करे, बजाए इसके कि दो हाथ और दो पैरों से सर्वदा के लिए नरक में डाला जाए।
9. यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे, और अपने से अलग कर दे, तेरे लिए यह भला है कि तू एक आंख के साथ जीवन में प्रवेश करे इसकी अपेक्षा कि दो आंखों के साथ नरक में फेंका जाए।
10. तू यह ध्यान रखना कि इन छोटी से छोटी किसी भी बात का तिरस्कार न करना; क्योंकि मैं तुझे बताता हूं, कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत स्वर्गीय पिता के सम्मुख खड़े रह सकें।
11. क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।
33. क्या तू अपने दासों पर दया नहीं दिखाता है, जैसे कि मैंने तुझ पर दया दिखाई थी?

नरक बहुत भयानक स्थान है! मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि वहां मत जाना!

मित्रो, स्वर्ग को जाने के लिए सब कुछ दे दो! यीशु ने आपके लिए ऐसा ही किया था!

वह परिवार कितना सुखी है,
जो शान्ति के साथ रहता और
परमेश्वर की महिमा करता है!

पुस्तकें

आपको पार्कर गैम्वैल के द्वारा लिखी गई दूसरी पुस्तक को भी पढ़ना चाहिए।

<u>परमेश्वर की योजना</u> क्योंकि इसके अन्दर चुने हुए पृष्ठों और विवरणों के साथ बाइबल का हृदय आपकी सहायता के लिए बन्द है। यह एक सूचनाओं की खान है। लोगों ने कहा कि इसने उनके जीवनों को बदल दिया है। (80 पृष्ठ)

यदि आप इसको बांटने में मदद करने के इच्छुक हैं या अगर आपको सहायता की ज़रूरत है तो हमें बताएं।

नीचे लिखे पते पर या पीछे के पृष्ठ पर लिखे गए पते पर लिखें–